

डॉ. चन्द्रकान्त मेहता
(जन्म : सन् 1939 ई.)

गुजरात विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति डॉ. चन्द्रकान्त मेहता बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। डॉ. मेहता की मातृभाषा गुजराती है किन्तु संस्कृत, प्राकृत एवं हिन्दी पर भी उनका समान अधिकार है। लगभग 50 वर्षों से हिन्दी एवं गुजराती लेखन के प्रति समर्पित डॉ. मेहता की गुजराती एवं हिन्दी में कई रचनाएँ प्रकाशित हैं।

‘साथ-साथ चल रही किरन’ निबंध संग्रह पर भारत सरकार ने उन्हें नेशनल अवोर्ड से सम्मानित किया है एवं उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ ने गुजराती हिन्दी की सेतु रूप सेवाओं के लिए ‘सौहार्द-सम्मान’ दिया है। अन्य कृतियों में ‘दिया जलाना कब मना है’, ‘दिशान्तर जरा ठहर जाओ’, ‘अन्वेषक और अन्य’ आदि प्रमुख हैं।

प्रस्तुत निबंध में चाहे जितना धन कमाओ, चाहे ऊँचे महल बनाओ, ऐशो-आराम की जिंदगी में भौतिक सुख तो अवश्य मिलता है, सोने-चाँदी के गहनों-आभूषणों से लद जाओ पर जब तक भीतरी शांति नहीं मिलती तब तक जीवन व्यर्थ है। सुख पैसे रुपयों से नहीं मिलता। जीवन का सुख उदारता और त्याग में समाया है।

जब ‘द्रव्य-भक्ति’ बढ़ जाती है तब जीवन-भक्ति कम हो जाती है। जब लोग अमीर बनने के कृत्रिम चाव में फँस जाते हैं तब अंतःकरण की अमीरी की सुगंध खो देते हैं। तृष्णा तो परंपरागत डाकूरानी होती है। जब तृष्णाएँ बढ़ती हैं तो मनुष्य की नेकी के समाप्त होने में देरी नहीं लगती।

मनुष्य के लिए जीना कोई मुश्किल काम नहीं है, हाँ, पर पवित्रतापूर्वक जीना अवश्य ही मुश्किल है। धन सुख का जादूगर भी है और शांति का डकैत भी। अभी तक किसी कोई भी दरजी ऐसा अँगरखा नहीं सिल पाया है जिसे पहनकर तृष्णातुर मनुष्य चैन की साँस ले सके।

कहा जाता है कि पोम्पीनगर के खंडहरों में खुदाई करते हुए एक नर-कंकाल प्राप्त हुआ था। उसकी मुट्ठी खोलने में काफी परेशानी हुयी थी। मुट्ठी खुलने के बाद पता चला कि मृत व्यक्ति ने अपने हाथ में सोना पकड़ रखा था। इसी प्रकार इसी शहर के एक व्यापारी ने अपनी अंतिम साँस लेते समये तकिये के नीचे से पैसों से भरी हुई एक थैली बाहर निकाली थी तथा अपने प्राण त्यागने के समय तक उसे खूब मजबूती से अपने हाथ में पकड़ रखी थी।

हमारे यहाँ पहले डाल-डाल पर सोने की चिड़ियाँ रहती थीं। आज अमीरों की पारिवारिक समस्याओं को दर्शाते हुए धारावाहिकों की ‘मानव-चिड़ियाँ’ गहनों से लदीफदी रहती हैं। घर के भीतर गहनों से सजी-सँवरी और खूब महँगी-महँगी साड़ियों में रौब से घूमती अभिमानी स्त्रियाँ संस्कारिता की धजियाँ उड़ाती हुई बेहूदे षड्यंत्रों में संलग्न रहती हैं। इनमें भारतीयता का तिलमात्र भी दर्शन होता है क्या? पहले त्याग द्वारा आनंद की प्राप्ति होती थी पर अब ‘भोगने के बाद फेंक देना’ मूलमंत्र हो गया है।

आज के जीवन में धन ही जीवन का नियंत्रक परिबल बन गया है अतः आज के मनुष्य की वृत्ति व प्रवृत्ति दोनों ही भ्रष्ट हो गयी हैं। अमीर को और अधिक अमीर बनने के लिए धन की प्यास है जबकि गरीब को अपना तन ढकने के लिए रुपयों की जरूरत है। गरीब स्वयं खून-पसीना एक करके धन कमाता है जबकि अमीर दूसरों को उल्लू बनाकर धन कमाता है। यदि गरीब अपने ‘गहने’ को संभाल सके तो, उसका गहना तो केवल स्वाभिमान ही है।

जब तक पैसे की खोज नहीं हुयी थी तब तक मनुष्य अंदर से अमीर था। एक लेखक के शब्द ध्यान देने योग्य हैं। वह कहता है - ‘सहृदयता, आत्मीयता, आशा, उल्लास तथा प्रेम ही वास्तविक धन हैं। इस पृथ्वी के एक छोटे से अंश को पाने के लिए मुझे इतना सख्त परिश्रम करने की आखिर क्या आवश्यकता है? समग्र पृथ्वी ही तो मेरी है। अगर कायदे-कानून की भाषा में यह पृथ्वी किसी और की कहलाती है तो इसमें इतनी ईर्ष्या क्यों करनी चाहिए? यह उसी की संपत्ति है जो इसका उपयोग कर पाता है। अतः संपत्ति के मालिकों से मुझे क्यों ईर्ष्या करनी चाहिए? मैं रेल का किराया देकर देशभर की सैर कर सकता हूँ। मेरा मन हो तो ताजगीभरी सुंदर हरी घास, छोटे-बड़े पौधे, मैदानों में लगे कीर्ति-स्तंभ तथा सुंदर बारीक कारीगरी वाले शिल्प व सुंदर चित्रों का आनंद ले सकता

हूँ । उन सब को अपने साथ घर ले जाने की जरूरत नहीं है, क्योंकि जहाँ पर ये सब हैं, वहाँ उनकी देखभाल व उनकी व्यवस्था जितनी अच्छी तरह से की गयी है, उससे आधी देखभाल भी मैं नहीं कर पाऊँगा । इस सृष्टि ने मुझे इस प्रकार की अनेक चीजें प्रदान की हैं । वन में घूमते हुए प्राणी हमारे हैं, नक्षत्र तथा महकते हुए फूल हमारे हैं । समुद्र, हवा, पक्षी तथा वृक्ष भी हमारे हैं । अब हमें दूसरी किसी चीज की आवश्यकता नहीं है । इस युग से पहले के सभी युग हमारे लिए काम करके गये हैं । हमें तो केवल अन्न व वस्त्र प्राप्त करने की आवश्यकता है और ये प्राप्त करना इस धरती पर बहुत आसान है ।’

वाल्मिकी, स्वामी रामतीर्थ, विवेकानंद, दयानंद, अरविंद के पास आखिर कौन-सा जमा किया हुआ धन था ? फिर भी क्या हम उन्हें गरीब कहने की हिम्मत कर सकते हैं ?

‘भाग्य के स्रष्टाओं’ में जॉन डंकन नामक एक स्कॉटलैंड के निवासी बुनकर के गरीब पुत्र की अमीरी का एक प्रेरणादायक उदाहरण है । जॉन बिलकुल अनपढ़, संकुचित दृष्टि का अशक्त, कुबड़ा तथा आर्थिक दृष्टि से कंगाल परिवार का पुत्र था । जब वह अपने मुहल्ले में से गुजरता था तब बच्चे उसे चिढ़ाते थे । बहुत बार तो पत्थर भी मार दिया करते थे । उसने ढोर चराने का काम शुरू किया तो उसके मालिक ने भी उसके साथ अत्याचार किया । कभी-कभी जॉन कपड़ों को निचोड़ते-निचोड़ते ठंड में काँपते-काँपते पूरी रात गुजार देता । एक दिन जॉन की इच्छा हुई कि वह पढ़ाई करना सीखे । कुछ समय के पश्चात् जब वह बुनाई के काम पर गया, तब उसने स्कूल में पढ़नेवाली एक बारह वर्ष की लड़की से उसे पढ़ाने की विनती की । सोलह वर्ष की उम्र में जॉन ने मूल अक्षर सीखने शुरू किये और इसके बाद तो वह खूब जल्दी से लिखना-पढ़ना सीखता ही गया । पहले से जंगल में इधर-उधर भटकने के कारण उसे वनस्पतियों की काफी अच्छी जानकारी थी । उसने वनस्पतिशास्त्र का एक ग्रंथ खरीदने के लिए पाँच शिलिंग जमा करने के लिए खूब जी तोड़ मेहनत से काम किया तथा वनस्पतिशास्त्र का गहरा अध्ययन करके उस विषय का पंडित बन गया । अब उसे पढ़ाई में इतनी अधिक रुचि हो गयी थी कि अस्सी वर्ष की वृद्धावस्था में भी एक पौधे को प्राप्त करने के लिए उसने बारह मील की पैदलयात्रा की थी । उसका शरीर दुर्बल था और जीर्ण-शीर्ण पहनावा, पर उसके दिमाग की करामात अद्भुत ! एक बार उसे एक अमीर आदमी मिला । जब उसे पता चला कि बाहर से एकदम साधारण सा दिखनेवाला जॉन वनस्पतिविज्ञान का महापंडित है, तो वह इस पर फिदा हो गया और उसने उसका जीवन-चरित्र अखबार में छपवा दिया । उसके बारे में पढ़कर बहुत से लोगों ने जॉन के पास काफी बड़ी-बड़ी रकम के चैक भेजे । परंतु उसने इस धन को अपने लिए प्रयुक्त नहीं किया और अपने वसीयतनामे में लिखा - “मुझे प्राप्त सारी धन-राशि का उपयोग गरीब विद्यार्थियों के प्राकृतिक विज्ञान के अध्ययन के लिए किया जाय तथा उनको प्रोत्साहन देने के लिए ‘स्कोलरशिप’ तथा ‘पारितोषिक’ भी दिये जाएँ ।” जॉन ने कीमती पुस्तकों का अपना ग्रंथालय भी आम लोगों के उपयोग के लिए दान में दे दिया था ।

भारत के अनेक महापुरुष भी इसी प्रकार गरीबी, अभाव तथा कठिनाइयों के दलदल में खिलने वाले कमल हैं । अपने-अपने क्षेत्रों में इन्होंने मूल्यवान प्रदान दिये हैं । धन के लिए उन्होंने धर्म (कर्तव्यपरायण) को लज्जित नहीं किया है । द्रव्य के लोभ में अपनी नीयत खराब नहीं की है । पद के लिए प्रतिष्ठा के साथ छेड़छाड़ नहीं की है ।

मनुष्यत्व अर्थात् उदारता तथा उदात्तता के प्रयोग के लिए प्राप्त हुआ दैवीय वरदान ! इसीलिए मुंशी प्रेमचंद ने कहा था कि मनुष्य यदि उदार बनता है तो देवदूत और यदि नीच बनता है तो शैतान । सोक्रेटिस के मतानुसार दुनिया में सम्मानपूर्वक जीने के लिए सबसे सरल और आवश्यक उपाय है कि आप अपने आपको जैसा बाहर से दिखाना चाहते हैं, वैसा ही भीतर भी बनें । वास्तव में मनुष्य स्वयं का ही विरोधी है । हम अपने सद्गुणों को स्वार्थ की बेआवाज बुलट से छलनी करते रहते हैं जीवनभर ! बाहर ही नहीं, अंदर से श्रीमंत अथवा अमीर बनना ही पैसा पचाने की कला है ।

शब्दार्थ

द्रव्यभक्ति धनलोभ तृष्णा लोभ, इच्छा, अपेक्षा चैन शांति रौब गर्व, अभिमान शिलिंग ब्रिटिश पौंड से छोटी मुद्रा जीर्ण-शीर्ण जर्जर बुलट बंदूक की गोली

मुहावरें

चैन की साँस लेना शांति होना खून-पसीना एक करना सख्त परिश्रम करना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

- (1) किसके बढ़ने पर जीवन-भक्ति कम हो जाती है ?
(अ) द्रव्य-भक्ति (ब) तरल-भक्ति (क) धन-भक्ति (ड) प्रभु-भक्ति
- (2) पोम्पीनगर के खंडहरों से मिले एक नर-कंकाल की मुट्ठी में क्या था ?
(अ) चाँदी (ब) सोना (क) मोती (ड) हीरा
- (3) मनुष्य अंदर से कब तक अमीर था ?
(अ) विज्ञान की खोज नहीं हुई थी तब तक (ब) टी.वी. को खोज नहीं हुई थी तब तक
(क) टेलिफोन की खोज नहीं हुई थी तब तक (ड) पैसों की खोज नहीं हुई थी तब तक
- (4) इनमें से वनस्पतिविज्ञान का महान पंडित कौन बन गया ?
(अ) विवेकानंद (ब) दयानंद (क) डंकन (ड) श्री अरविंद

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

- (1) लोग अंतःकरण की अमीरी की सुगंध कब खो देते हैं ?
- (2) सुख का जादूगर और शांति का डकैत कौन-सा है ?
- (3) आज जीवन का नियंत्रक परिबल कौन है ?
- (4) अमीर धन कैसे कमाता है ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

- (1) तृष्णा को परंपरागत डाकूराजी क्यों कहा गया है ?
- (2) व्यापारी ने अपनी अंतिम साँस लेते समय रुपयों की थैली मजबूती से हाथ में क्यों पकड़ रखी थी ?
- (3) आज वास्तविक धन कौन-कौन-से गुण में हैं ? क्यों ?
- (4) आज मनुष्य की वृत्ति व प्रवृत्ति दोनों ही भ्रष्ट क्यों हो गई है ?
- (5) डंकन के जीवन से क्या संदेश मिलता है ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :

- (1) पोम्पीनगर के खंडहरों के कंकाल और एक व्यापारी के हाथ में अंतिम समय तक क्या था ? क्यों ?
- (2) डंकन वनस्पतिशास्त्र का महापंडित कैसे बना ?
- (3) भारत के महापुरुषों को कीचड़ में खिलने वाले कमल क्यों कहा है ?
- (4) 'बाहर ही नहीं अंदर से श्रीमंत अथवा अमीर बनना ही पैसा पचाने की कला है।' समझाइए।

5. निम्नलिखित कथनों को समझाइए :

- (1) 'धन सुख का जादूगर भी है और शांति का डकैत भी।'।
- (2) 'पहले त्याग द्वारा आनंद की प्राप्ति होती थी पर अब भोगने के बाद फेंक देना' - मूल मंत्र हो गया है।
- (3) 'आज जीवन में धन ही जीवन का नियंत्रक परिबल बन गया है।'।

6. सूचनानुसार लिखिए :

- (1) मुहावरों का अर्थ देकर वाक्य में प्रयोग कीजिए : चैन की साँस लेना, खून-पसीना एक करना
- (2) दिए गए शब्दों के विशेषण बनाइए : अमीर, परिवार, अभिमान, परिश्रम, दिन, दर्शन
- (3) दिए गए शब्दों से भाववाचक बनाइए : मनुष्य, डाकू, व्यक्ति, दुर्बल, लज्जा

योग्यता-विस्तार

- वाल्मीकि, स्वामी रामतीर्थ, विवेकानंद के जीवनकार्य की जानकारी एकत्रित कीजिए।
- 'भीतरी-समृद्धि' पर वर्तुत्व स्पर्धा का आयोजन कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'जीवन में धन से ज्यादा महत्त्व गुणों का है।' इस कथन को समझाइए।

